International Journal of Applied Research 2017; 3(11): 186-187

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(11): 186-187
www.allresearchjournal.com
Received: 22-08-2017
Accepted: 26-09-2017

डॉ0 अशोक कुमार दुबे
एसोशिएट प्रोफेसर–संस्कृत
बी0एस0एन0वी0 पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Correspondence
डॉ0 अशोक कुमार दुबे
एसोशिएट प्रोफेसर–संस्कृत
बी0एस0एन0वी0 पी0 जी0 कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

राम–नाम की महिमा

डॉ0 अशोक कुमार दुबे

सारांश
श्रीभगवान् के रूप, लीला और गुणों की भाँति ही उनका नाम भी अप्राकृत और चिदानन्दमय है। नाम अलौकिक शक्ति सम्पन्न है। नाम के प्रभाव ऐश्वर्य, मोक्ष और भगवत्प्रेम तक की प्राप्ति हो सकती है। नामाभास को छोड़कर गुरुप्रदत्त शक्ति से सम्पन्न नाम का यदि विधिपूर्वक अभ्यास किया जाय तो उससे जीव के सभी पुरुषार्थ सिद्ध हो सकते हैं। नाम के जाग्रत होने पर उसके प्रभाव से सद्गुरु की प्राप्ति और तदनन्तर सद्गुरु से इष्ट मन्त्र–रूपी विशुद्ध बीज की प्राप्ति हो सकती है। बीज के क्रम–विकास से चैतन्य की अभिव्यक्ति होती है और देह एवं मन की सारी मलिनता दूर होकर सिद्धावस्था का उदय हो जाता है। मन्त्रसिद्धि वस्तुतः भूतशुद्धि और चित्तशुद्धि के फलस्वरूप होती है। इस अवस्था में स्वभाव की प्राप्ति हो जाती है, इसलिये समस्त अभावों की निवृत्ति हो जाती है। यद्यपि यह अवस्था सिद्धावस्था के अन्तर्गत मानी जाती है; परन्तु यही भगवद्जन नहीं होता। इसलिये और राजमार्ग के भगवद्जन की सुलभता के लिये अशुद्ध देह के उच्चस्तर पर भाव–देह की अभिव्यक्ति आवश्यक होती है। भाव–देह में जो भजन होता है, वह स्वभाव का भजन होता है, वह विधि–मार्ग की नियमबद्ध उपासना नहीं है। मन्त्र–चैतन्य के बाद, विधिमार्ग की कोई सार्थक्ता नहीं रह जाती।

मूल शब्द : सद्गुरु की प्राप्ति, श्री राम नाम, सिद्धावस्था, अलौकिक।

प्रस्तावना
भक्त के भाव देह के विकास के साथ–साथ उसकी भावरन्जित दृष्टि के सम्मुख इष्ट देवता का ज्योतिर्मय धाम अपने आप ही प्रस्फुटित हो जाता है। इसके पश्चात् भजन के प्रभाव से भाव–रूपा भक्ति के प्रेमभक्ति में परिणत होने पर पूर्ववर्णित ज्योतिर्मय धाम में इष्ट–देवता का स्वरूप प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होने लगता है। यही प्रेम की अवस्था है। इसके बाद भक्त और उसके इष्ट की पृथक् सत्ता विगलित होकर दोनों के एकीभूत हो जाने पर रस की अभिव्यक्ति होती है। यही अद्वैत अवस्था है। इसी अवस्था में भक्त के स्थायी भाव के अनुरूप अनन्त प्रकार की नित्य लीलाओं का आविर्भाव हुआ करता है। यही भक्ति–साधना की सिद्धावस्था है।
श्रीभगवान् का नाम इस प्रकार रस के स्वरूप में अपने को प्रकट करता है। इसी का नाम साधना का साधारण तत्व है।
श्रीरामनाम श्रीभगवान् का एक विशिष्ट नाम है। इसकी महिमा अनन्त है। शास्त्रों ने इसी को 'तारक–ब्रह्म' कहा है। यह प्रणव से अभिन्न है, इस बात को भी ऋषि मुनियों ने बार–बार बतलाया है। कहा जाता है कि परम भागवत श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी को देह–त्याग के कुछ दिनों पूर्व अलौकिक भाव से श्रीमन्महावीरजी ने रामनाम का रहस्य बतलाया था। उन्होंने कहा कि विश्लेषण करने पर रामनाम में पाँच अवयव या कलाओं की प्राप्ति होती है। इनमें प्रथम का नाम 'तारक' है और पिछले चारों नाम क्रमशः–'दण्डक', 'कुण्डल', 'अर्धचन्द्र' और 'बिन्दु' हैं। मनुष्य स्थूल, सूक्ष्म और कारण देह को लेकर इस मायिक जगत् में विचरण करता रहता है। जब तक माया का भेद नहीं होता, तब तक महाकारण देह की प्राप्ति नहीं हो सकती। साधक को गुरूपदिष्ट क्रम के अनुसार स्थूल देह के समस्त तत्वों को नाम के प्रथम अवयव 'तारक' में लीन करना पड़ता है। स्थूल देह एवं अन्यान्य तीनों देह पांचभौतिक हैं। स्थूल में अस्थि, त्वक् आदि पाँच पृथ्वी के; भेद, रक्त, रेतः आदि पाँच जल के; क्षुधा, तृष्णा आदि पाँच आकाश के कार्य हैं। अन्य तीनों देहों में भी इसी प्रकार पंचभूतों के अंश हैं। प्रत्येक तत्व की पाँच प्रकृति होती है। इसी से स्थूल देह में पाँच तत्वों की पच्चीस प्रकृति हैं। इसी प्रकार अन्य तीनों देहों में पच्चीस प्रकृति हैं।
साधना के प्रभाव से स्थूल देह के पाँचों तत्व जब तारक में लीन हो जाते हैं तब सूक्ष्म देह के पाँचों तत्वों को नाम के दूसरे अवयव 'दण्डक' में लीन करना पड़ता है। इधर पूर्वोत्तर तारक भी स्थूल तत्वों

को अपने अन्दर लेकर 'दण्डक' में लीन हो जाता है। इसके बाद कारणदेह के तत्व नाम के तीसरे अवयव 'कुण्डल' में लीन हो जाते हैं। साथ ही दण्डक भी कुण्डल में लीन हो जाता है। कारणदेह की निवृत्ति के पश्चात शुद्ध सत्वमय महाकारण–देह को नाम के चतुर्थ अवयव 'अर्धचन्द्र' में लीन करना पड़ता है। महाकारण–देह तक जड़ का ही खेल समझना चाहिये। हाँ, महाकारण–देह जड़ होने पर भी शुद्ध है; परन्तु स्थूल, सूक्ष्म और कारण जड़ अशुद्ध हैं। महाकारण–देह के अर्धचन्द्र में लीन हो जाने के बाद 'कैवल्य' देहमात्र बचा रहता है। यह विशुद्ध चित्स्वरूप ओर जड़ सम्बन्ध से रहित है। अर्धचन्द्र के बाद का नाम का पाँचवाँ अवयव या कला बिन्दुरूप से प्रसिद्ध है। बिन्दु पराशक्ति श्रीजानकीजी का स्वरूप है। बिन्दुरूपा श्रीजानकीजी का आश्रय लिये बिना कालातीत श्रीराघव का सन्धान नहीं मिल सकता। बिन्दु के अतीत रेफ ही परब्रह्म श्रीरामचन्द्र हैं। बिन्दुरूपिणी सीताजी और रेफरूपी श्रीरामचन्द्रजी में दृढ़ अनुराग जब अचल हो जाता है, तब भवबंधन से मुक्ति मिल जाती है। और तभी सिद्ध पँचरसों का आस्वादन हो सकता है, इससे पहले नहीं। शान्तरस के रसिक प्रह्लादादि, दास्य के हनुमान् आदि, सख्य के सुग्रीव–विभीषणादि, वात्सल्य के दशरथ आदि और श्रृंगाररस के मूर्तस्वरूप जनकपुर की युवतियाँ–विशेषतः श्रीजानकीजी स्वयं है।

कैवल्य–देह में चित्तत्व का स्फुरण वर्तमान है। उसके बाद तत्वातीत ब्रह्म वस्तु है, जो शक्तिरूप में श्रीजानकीजी के नाम से और शक्ति के आश्रयरूप से श्रीराम के नाम से भक्तों के लिये सुपरिचित हैं। महावीर जी ने जो उपदेश दिया है, उसका तात्पर्य यही है कि बिन्दु का आश्रय लिये बिना निष्फल परब्रह्म की ओर अग्रसर नहीं हुआ जा सकता। वैसे प्रयत्न से बड़े अनर्थ की सम्भावना है।

तुलसी मेटैं रूप निज बिंदु सीय को रूप। देखि लखै सीता हिय राघव रेफ अनूप।।

तुलसी जो तजि सीय को बिंदु रेफ में चाहु। तौ कुंभी महँ कल्प शत जाहु पर जाहु।।

अतएव जो रामनाम के रसिक हैं, वे अर्धचन्द्रबिन्दु और रेफ को एक कर डालते हैं; पृथक् नहीं होने देते। और इस एक में ही उनके आस्वादन के लिए अचिन्त्य विचित्र लीलाएँ प्रस्फुटित हो उठती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वैदिक माइथोलाजी मैकडोनेल– हिन्दी अनुवाद–रामकुमार राय– पृ0–191–197
2. कल्याण, वर्ष 23 अंक–11
3. सं0 विश्वनाथ शुक्लः भक्तिर्मामांसा पृ0।
4. कल्याण भक्ति (भक्ति अंक) वर्ष–32 पृ0 3
5. पुराण परिशीलन–श्रीगिरधर शर्मा–पृ0–218
6. हिन्दी ऋग्वेद–इण्डियन प्रेस लिमिटेड–प्रयागए पृ0 1336